

Padma Shri



SHRI K.C. SIVASANKARAN (POSTHUMOUS)

Shri K.C. Sivasankaran aka Chandamama Artist Sankar was recognized by the iconic "Vikram-Vetal" drawing, where King Vikramaditya walks off a cremation ground with the dead body on his shoulder. He joined the then most popular Children's Magazine Chandamama on 1st December, 1952 and stayed with the organization for over 63 years, until the publication ceased. The Vikram-Vetal drawing was subsequently copyrighted in his name.

2. Born on 19th July, 1924 in Kolinjivady village in Dharapuram town (now in Tiruppur District, Tamilnadu), Shri Sivasankaran's family subsequently moved to Madras city in the late 30's where he continued his schooling. Being extraordinarily gifted, he was always miles ahead of the skills of his Drawing Masters, who recognized his natural talent and guided him to pursue a career as an Artist. Accordingly, after completing his Matriculation, he joined The School of Arts in Madras (later, College of Arts) in 1942, where he was placed directly in the 2nd year of the 5-year course, based on the extraordinary talent he displayed in the One week-long entrance exams. As the Student Union Leader at the School of Arts, he was chiefly instrumental in securing the free course material for all the students, from the institution.

3. After graduating the Art course with flying colours, Shri Sivasankaran joined the publishers MLJ Press in Madras, who brought out literary Tamil magazines Kalaimagal, Kannan and Manjari, where he worked for 6 years, before (late) Shri Nagi Reddy, the doyen of southern film industry, who was also a multi-faceted entrepreneur, then searching for the best talents to expand his pet project of the children's magazine Chandamama, published at that time in 4 Indian languages of Hindi, Telugu, Kannada and Tamil (as Ambulimama), recruited him, on his terms of freedom at work. The magazine went on to grow and became the only children's magazine to publish in 13 languages, later.

4. Shri Sivasankaran was also an avid photographer, and a member of the then Madras Photographic Society that periodically published his creative photographs. He had also won awards for best photographs, which were published in famous photographic magazines of the time. Consciously ignoring numerous lucrative offers for better remunerative benefits, he stayed with Chandamama to continue expressing what he loved most, through his art. The magazine was and remains unique for many reasons, particularly for the way moral stories were narrated to evoke unfailing interest in children to read them. In this context, the drawings created by him that were published alongside each story, played an impactful part to carry home the moral message. Along with the social stories, cultural identities like the Epics of India, the Ramayana and Mahabharata were also published as series periodically, where his imaginative depictions of the Gods and Goddesses, Kings and Queens brought alive the detailed descriptions narrated by Valmiki and Vyasa. Stories such as these, carrying imagination-kindling pictures drawn by him alongside, spread the awareness of our rich culture even while making good human beings out of the readers, with the highest human values. In the later part of his career however, he also agreed to create drawings for the moral stories published on the magazine Ramakrishna Vijayam, brought out by Sri Ramakrishna Math of Chennai, on the recommendation from the owners of Chandamama.

5. Shri Sivasankaran was an epitome of loyalty and principles. A manaseega guru to many aspiring artists, he was invited and felicitated by many organizations and educational institutions where at times he was requested to judge the creative work in competitions.

6. Shri Sivasankaran passed away on 29th September, 2020.



श्री के.सी. शिवसंकरन् (मरणोपरांत)

श्री के. सी. शिवसंकरन् उर्फ चंदामामा कलाकार शंकर "विक्रम-वेताल" चित्रों के लिए विख्यात थे। इन चित्रों में में राजा विक्रमादित्य श्मशान से एक मृत शरीर अपने कंधे पर उठाकर चलते हैं। उन्होंने 1 दिसंबर, 1952 को उस समय की सबसे लोकप्रिय बाल पत्रिका चंदामामा में काम करना शुरू किया और प्रकाशन बंद होने तक, 63 वर्षों से अधिक समय तक इससे जुड़े रहे। बाद में, विक्रम-वेताल चित्र उनके नाम से कॉपीराइट हुए।

2. 19 जुलाई, 1924 को धारापुरम शहर (अब तमिलनाडु के तिरुपुर जिले में स्थित) के कोलिजीवाडी गाँव में जन्मे, श्री शिवसंकरन् का परिवार 30 के दशक के अंत में मद्रास शहर आ गया जहाँ उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा जारी रखी। असाधारण प्रतिभा के कारण, वह चित्रकारी के कौशल में अपने ड्रॉइंग के अध्यापकों से आगे थे। उनके अध्यापकों ने उनकी नैसर्गिक प्रतिभा को पहचाना और चित्रकारी को अपना करियर बनाने के लिए उनका मार्गदर्शन किया। तदनुसार, अपनी मैट्रिक की पढ़ाई पूरी करने के बाद, उन्होंने वर्ष 1942 में मद्रास में कला विद्यालय (बाद में, कला महाविद्यालय) में प्रवेश लिया। यहां एक सप्ताह चलने वाली प्रवेश परीक्षा में उनकी असाधारण प्रतिभा के आधार पर उन्हें सीधे 5 वर्षीय पाठ्यक्रम के दूसरे वर्ष में प्रवेश दे दिया गया। कला विद्यालय में छात्र संघ के नेता के रूप में, उन्होंने संस्थान से सभी छात्रों के लिए मुफ्त पाठ्य-सामग्री प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3. श्री शिवसंकरन् ने कला स्नातक पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद मद्रास में एमएलजे प्रेस में काम करना शुरू किया जहां साहित्यिक तमिल पत्रिकाओं कलाईमगल, कन्नन और मंजरी का प्रकाशन किया जाता था। यहां उन्होंने छह वर्ष तक काम किया। उसी दौरान दक्षिण फिल्म उद्योग के दिग्गज और एक बहुआयामी उद्यमी (स्वर्गीय) श्री नागी रेड्डी, 4 भारतीय भाषाओं हिंदी, तेलुगु, कन्नड़ और तमिल (अंबुलिमामा के रूप में) में प्रकाशित होने वाली अपनी बाल पत्रिका चंदामामा को आगे बढ़ाने के लिए श्रेष्ठ प्रतिभाओं की खोज कर रहे थे। उन्होंने काम करने की स्वतंत्रता की शर्त पर उनको नौकरी पर रख लिया। पत्रिका निरंतर प्रगति करती रही और बाद में 13 भाषाओं में प्रकाशित होने वाली एकमात्र बाल पत्रिका बन गई।

4. श्री शिवसंकरन् एक जिज्ञासु फोटोग्राफर भी थे और तत्कालीन मद्रास फोटोग्राफिक सोसाइटी के सदस्य थे। इस सोसायटी ने समय-समय पर उनकी रचनात्मक तस्वीरों को प्रकाशित किया। उन्हें उस समय की प्रसिद्ध फोटोग्राफी पत्रिकाओं में प्रकाशित अपने सर्वश्रेष्ठ चित्रों के लिए पुरस्कृत भी किया गया। बेहतर भुगतान वाले अनेक आकर्षक प्रस्तावों की अनदेखी करते हुए वह 'चंदामामा' के साथ जुड़े रहे और अपनी कला के माध्यम से अपना पसंदीदा काम करते रहे। यह पत्रिका कई कारणों से खासकर बच्चों में नैतिक कहानियां पढ़ने की रुचि पैदा करने के मामले में अनूठी थी और आज भी अनूठी है। प्रत्येक कहानी के साथ प्रकाशित उनके चित्रों ने नैतिकता का संदेश पहुंचाने में प्रभावशाली भूमिका निभाई। सामाजिक कहानियों के साथ-साथ, भारत की सांस्कृतिक अस्मिता के प्रतीक रामायण और महाभारत महाकाव्य समय-समय पर श्रृंखला रूप में प्रकाशित किए गए, जिनमें देवी-देवताओं, राजाओं और रानियों के उनके कल्पनाशील चित्रों ने वाल्मीकि और व्यास द्वारा वर्णित दृश्यों को जीवंत कर दिया। उनके कल्पनात्मक चित्रों से सुसज्जित कथाएं, पाठकों को हमारी समृद्ध संस्कृति के बारे में जागरूक करती हैं और उनमें उच्चतम मानवीय मूल्यों का संचार करके उन्हें श्रेष्ठ मनुष्य बनाती हैं। वह, अपने करियर के बाद के दिनों में, चंदामामा पत्रिका के मालिकों की सिफारिश पर, चेन्नै के श्री रामकृष्ण मठ द्वारा प्रकाशित रामकृष्ण विजयम पत्रिका में प्रकाशित नैतिक कथाओं के लिए चित्र बनाने के लिए भी तैयार हो गए।

5. श्री शिवसंकरन् निष्ठा और सिद्धांतों के प्रतीक थे। कई उदीयमान कलाकारों के मानसीगा गुरु श्री शिवसंकरन् को कई संगठनों और शिक्षा संस्थानों द्वारा आमंत्रित और सम्मानित किया गया था जहां उन्होंने कई बार संस्थानों के अनुरोध पर प्रतियोगिताओं में निर्णायक की भूमिका भी निभाई।

6. श्री शिवसंकरन् का 29 सितंबर, 2020 को देहावसान हो गया।